K. Nand B.A II Hons

कुछ हटकर हो सकती है। साक्षात्कार विधि में इन त्रुटियों को रोकने का कोई प्रावधान नहीं है।

(iii) साक्षात्कार विधि द्वारा बालकों के दैनिक व्यवहारों का अध्ययन करते समय यह देखा जाता है कि साक्षात्कार के परिवेश में आयने के पाकार, बालक अक्सर घबरा, सकुचा जाते (Nervous) जाते हैं। ते कभी डरे-डरे-से दीखते हैं। कभी कभी तो बालक इतना अधिक घबरा जाते हैं कि वे सब कुछ जानते हुए भी प्रश्नों का सही सही उत्तर नहीं दे पाते। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक या साक्षात्कारकर्ता के लिए किसी निश्चित एवं वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचना संभव नहीं हो पाता है।

(iv) साक्षात्कार विधि द्वारा बालकों के कुछ खास शीलगुणों या व्यवहारों का अध्ययन नहीं किया जा सकता। स्वार्ज (Schwartz, 19xx) के अनुसार साक्षात्कार विधि द्वारा बालकों कुछ विशेष शीलगुण जैसे ईमानदारी (honesty) तथा अन्य चरित्र संबंधी शीलगुण को साक्षात्कार में मात्र कुछ मिनट बातचीत करके सही-सही नहीं आँका जा सकता।

(v.) साक्षात्कार विधि का एक सामान्य दोष (common defect) यह बताया गया है कि मात्र चन्द मिनटों तक बालकों से प्रश्न पूछकर तथा उनके द्वारा दिये गए उत्तरों एवं दिखलाई गई भाव-भंगिमा को देखकर एक ठोस निष्कर्ष पर पहुँचना जल्दबाजी में किया गया एक कदम कहा गया है। बालकों के व्यक्तित्व का समस्त मूल्यांकन (overall evaluation) साक्षात्कार के चन्द मिनटों पर आधारित करना अधिक वैज्ञानिक कदम नहीं माना जा सकता है। P.T.O

R. Nand B.A. 2nd Hons 16/10/22

ऊपर के वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि साक्षात्कार विधि की कई खामियाँ हैं। इन खामियों के बावजूद साक्षात्कार विधि का प्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान में अधिक किया है।

एक सफल साक्षात्कार के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ (Necessary conditions for a successful interview)

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट हो चुका है कि साक्षात्कार विधि में कुछ खामियाँ (limitation) हैं, फिर भी इसका प्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान में काफी किया जा रहा है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने साक्षात्कार को और अधिक सफल बनाने के लिए कैसी परिस्थितियों (conditions) का वर्णन किया है जिसमें साक्षात्कार को अधिक सफलता मिल सकती है। लिण्डजे तथा एरोनसन (Lindzey & Aronson, 1968) के अनुसार ऐसी आवश्यक परिस्थितियाँ (conditions) निम्नांकित तीन हैं:-

अभिगम्यता (Accessibility) - शैक्षिक साक्षात्कार (educational interview) की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि साक्षात्कार में पूछे गए प्रश्नों का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसे बालक आसानी से शिक्षक या साक्षात्कारकर्ता को बता सके। बालकों से ऐसा प्रश्न नहीं पूछना चाहिए जिनका उत्तर देने में उन्हें अधिक संकोच या हिचक हो अन्यथा साक्षात्कार की सफलता मारी जाएगी।

K. Nand B.A II Hons

(ii) संज्ञानू (cognition) - संज्ञान से तात्पर्य इस तथ्य से होता है कि बालक को यह पूर्णरूपेण ज्ञान होना चाहिए कि उससे क्या पूछा या कहा है दूसरे शब्दों में शिक्षक या साक्षात्कार कर्ता को इस ढंग का प्रश्न पूछना चाहिए की बालक अच्छी तरह से समझ जाए कि उनसे किस संदर्भ में (context) में क्या पूछा या कहा है। ऐसा होने पर ही सही-सही उत्तर बालक दे पायेंगे और साक्षात्कार के वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति हो पाएगी

(iii) → अभिप्रेरणा (motivation) - साक्षात्कार की सफलता के लिए तीसरी परिस्थिति अभिप्रेरण की परिस्थिति बताई गई है। दूसरे शब्दों में साक्षात्कार की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि बालक साक्षात्कार में पूछे गए प्रश्नों का जवाब देने के लिए ठीक ढंग से प्रेरित हो। यदि वह किसी कारण से जवाब नहीं देना चाहता है या जवाब देने के लिए प्रेरित नहीं है, तो इससे साक्षात्कार की सफलता की उम्मीद समाप्त हो जाएगी।